।। श्री वीतरागाय नमः।।

श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट, नागपुर द्वारा संचालित

भगवान श्री महावीर विद्यानिकेतन

नेहरु पुतला के सामने, इतवारी, नागपुर – 44 00 02 (महाराष्ट्र)

क्रमांक MVN2012 दिनांक 08/05/2012

प्रिय साधर्मीजन,

सादर जय-जिनेन्द्र!

- आशा है आप सकुशल होंगे। स्वाध्याय नियमित चल रहा होगा।
- हम आपको सूचित करना चाहते हैं कि श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट, नागपुर द्वारा संचालित **भगवान श्री महावीर विद्यानिकेतन**, सफलतापूर्वक अपने पंचम वर्ष में प्रवेश कर गया है। प्रतिवर्ष की सोनगढ़ यात्रा एवं यहाँ प्रदत्त पूज्य गुरुदेवश्री के वीतरागी तत्त्वज्ञान से छात्रों की आध्यात्मिक एवं धार्मिक शिक्षा वृद्धिंगत हो रही है, जिससे सम्पूर्ण समाज अत्यन्त सन्तुष्ट है।
- यहाँ विद्या निकेतन में कक्षा 8 से 12 तक के छात्रों को उनकी योग्यतानुसार हिन्दी/मराठी/अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में प्रवेश दिलाया जाता है। हम प्रत्येक छात्र पर प्रतिवर्ष लगभग 45 से 50 हजार रुपये तक खर्च करते हैं; लेकिन प्रत्येक छात्र के माता-पिता से लौकिक शिक्षा, लौकिक विषयों की ट्यूशन एवं स्कूल जाने के आवागमन खर्च के अन्तर्गत मात्र 15,000/– रुपये वार्षिक खर्च ही लेते हैं, परन्तु इससे कुछ खास मदद नहीं हो पाती है; अतः संस्था अन्य योजनाओं के अन्तर्गत प्रतिवर्ष शिक्षा सहयोग/प्रतिवर्ष भोजन सहयोग आदि के रूप में दानराशि स्वीकार करती है।
- यहाँ की मुमुक्षु समाज मात्र 25–30 घर की है, उसमें भी सामान्य परिस्थिति के ही अधिकांश लोग हैं। फिर भी उनसे यथायोग्य अधिकतम सहयोग मिलता ही रहता है। हम प्रतिवर्ष श्री महावीर विद्या निकेतन के संचालन, वीतराग-विज्ञान भवन और जिन-मन्दिर के रख-रखाव के लिए उनसे सहयोग लेते ही हैं।
- हमारा सन् 2009–2010 में 28 विद्यार्थियों पर संस्था का कुल खर्च 16 लाख रुपये आया था। पश्चात् सन् 2010–2011 में यह खर्च बढ़कर कुल 32 विद्यार्थियों पर 19,32,006/– रुपये आया, जबकि इस सत्र में कुल आवक 8,30,484/– हुई। इस प्रकार वर्ष का कुल घाटा हमें 9,05,522/– रहा। पुनः वर्ष 2011–2012 में अनेक अच्छे छात्र मिलने के कारण संस्था ने नये 26 विद्यार्थियों को प्रवेश दिया गया, जबकि पुराने छात्र 21 बचे, इस प्रकार कुल छात्रों की संख्या 47 हो जाने से इस वर्ष का खर्च भी लगभग 25 लाख से भी अधिक आने की सम्भावना है।
- आगामी वर्षों में छात्रों की संख्या बढ़ने पर हमारा खर्च उसी अनुपात में बढ़ेगा; अतः इसके सुचारु संचालन के लिए संस्था को लगभग एक करोड़ रुपये का ध्रुवफण्ड बनाना अत्यन्त जरूरी हो गया है, इस उद्देश्य की पूर्ति करने के लिए हमने एक योजना बनाई है, इस योजना के अन्तर्गत हम आपके साथ साथ आपके अन्य मित्रों, सहयोगियों तथा साधर्मियों से भी सहयोग प्राप्त करने के लिए आपसे प्रेरणा देने की अपेक्षा रखते हैं। आशा है आपका सहयोग हमें अवश्य प्राप्त होगा।

- इस सम्बन्ध में **हमारी योजना** निम्न प्रकार है –

पद	न्यौछावर राशि
1. शिरोमणि संरक्षक	**पॉच लाख रुपये मात्र**
2. परम संरक्षक	**दो लाख रुपये मात्र**
3. संरक्षक	**एक लाख रुपये मात्र**
4. परम सहयोगी सदस्य	**इक्यावन हजार रुपये मात्र**
5. सहयोगी सदस्य	**इक्यावन हजार रुपये मात्र**
6. एक छात्र को तीन वर्ष के लिए गोद	**इक्यावन हजार रुपये मात्र**
7. एक छात्र को एक वर्ष के लिए गोद	**इक्कीस हजार रुपये मात्र**
8. कम्प्यूटर सहयोग	**इकतीस हजार रुपये मात्र**
9. एक छात्र को एक वर्ष के लिए भोजन सहयोग	**इक्कीस हजार रुपये मात्र**
10. एक छात्र को एक समय का भोजन सहयोग	**ग्यारह हजार रुपये मात्र**

- आशा है आप अत्यन्त सहानुभूति पूर्वक हमारे निवेदन को स्वीकार करेंगे – ऐसा विश्वास है।

सादर धन्यवाद सहित,

निवेदक

नरेश जैन	**डॉ. राकेश शास्त्री**	**विपिन जैन**	**आदिनाथ नखाते**	**अशोककुमार जैन**
संयोजक	निर्देशक	प्राचार्य	अध्यक्ष	मन्त्री
श्री महावीर विद्या निकेतन : संचालन समिति			**श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट**	

।। दान की महिमा।।

- एक मनुष्य के पास उत्तम पात्रदान से उत्पन्न पुण्य का समुदाय है तथा दूसरे मनुष्य के पास राज्यलक्ष्मी विद्यमान है तो भी प्रथम मनुष्य की अपेक्षा द्वितीय मनुष्य दरिद्र ही है क्योंकि उसके पास आगामी काल में फल देने वाला कुछ भी नहीं है।
- श्रावक को निरन्तर सम्पत्ति के अनुसार एक ग्रास, आधा ग्रास अथवा उसके भी आधे भाग अर्थात् ग्रास के चतुर्थांश का दान अवश्य करना चाहिए।
- जिस मनुष्य का धन, दान के लिए नहीं है; शरीर, व्रत के लिए नहीं है तथा शास्त्राभ्यास, कषायों के उपशम के लिए नहीं है; वह मनुष्य, बार बार जन्म–मरण को धारण करता हुआ सांसारिक दुःख को ही सहन करता है।
- शुद्ध आत्मा के पुरुषार्थ की सिद्धि, पात्रदान के प्रभाव से मुमुक्षु को अनायास ही हस्तगत हो जाती है। (- पद्मनन्दि पंचविंशतिका, अध्याय २)

(ए)कृक्रऊँ्र-पऽ